शीर्षक :- "युग ने युग से प्रश्न किया"

युग ने युग से प्रश्न किया कौन सा देश तुम्हारा है ?
उस युग ने सबको बतलाया वीरों का देश हमारा है ।

चीरकाल से भारत माँ को सबने गले लगाया है
भारत माँ के शत्रुओं को वीरों ने ही काल दिखाया है ।

भारत माँ के खातिर अपने प्राणोंका बलि चढाया है
प्राण न्योछावर करके भी वीरों ने इसे बचाया है ।

स्वतंत्रता हेतु जिस सपूत ने पसिना लहु बहाया है
उस वीरों के सम्मानमें सारा दुनिया ने शिष झुकाया है ।

यहाँ देख वीरता वीरों का अन्याय भी थर्थर होता है
यह देश है वीर जवानों का जहाँ वीरता सबका काया है ।

जिसने भी हमसे वैर किया सदा ही वो पछताया है
हम वासी हैं उस देशका जो वीरों का देश कहलाता है ।

ऋषि मुनि तपस्वी ने जिस भारत माँ को संवारा है
अवतार धारी श्री राम ने भी उसे माता कहके पुकारा है ।

ध्रुव तारा बन भारत ने विश्वको पथ दिख्लाया है
कला संस्कृति सभ्यताका जगमे पाठ सिखाया है ।

विश्वका सङ्कट कालमे इसने साथका हाथ बढाया है
वीर साहसी ममतामयी बनकर तिरंगा जगमे लहराया है ।

जलमे थलमे नभमे भी भारत ही भारत छाया है
हम उस देशके वासी हैं जिसने सबको जीवनमंत्र बताया है ।

युगका उत्तर सुनकर युग ने धन्य हो तुम गुण गाया है
तुम उस युगका वासी हो जिसने मेरा भी श्रेय बढाया है ।

लेखक :- रन्जित कुमार चौधरी (शिक्षक)
दिल्ली पब्लिक स्कुल, वीरगंज